Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 4, Issue - 11, Nov - 2021
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 5.146
Received on : 01/11/2021 Accepted on : 14/11/2021 Publication Date: 15/11/2021

आदिवासी महिलाओं की शिक्षा में आने वाली विभिन्न समस्याएँ एवं सुझाव

[1] डॉ. कुशल जैन कोठारी , [2] अनिता चौहान

[1] (प्राध्यापक अर्थशास्त्र) अर्थशास्त्र विभाग, माता जीजाबाई शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय इंदौर, देवी अहिल्या विश्वविद्यलय, इंदौर मध्यप्रदेश, भारत

[2] (शोधार्थी अर्थशास्त्र) अर्थशास्त्र विभाग, माता जीजाबाई शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय इंदौर, देवी अहिल्या विश्वविद्यलय, इंदौर मध्यप्रदेश, भारत

Email - [1]kushal_jain1@yahoo.com, [2]sanuchouhan04@gmail.com

सारांशः- देश में आदिवासी महिलाओं की शिक्षा सरकार के साथ ही समाज के लिये भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। क्योकि शिक्षा राष्ट्र विकास का प्रमुख आधार है। राष्ट्र के समावेशी विकास के लिये समाज के कमजोर एवं वंचित वर्गों तथा महिलाओं को भी मानव संसाधन विकास में शामिल किया जाना आवश्यक है। क्योंकि इसी से राष्ट्र का समग्र विकास संभव है। शिक्षा समाज में व्याप्त कुरीतियो, रुढिवादी सोच एवं शोषण से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त कर सकती है। शिक्षा सफलता की चाबी है, यह महिलाओं के लिये भी उतनी ही सार्थक है, जितनी पुरुषों के लिये। यह महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरुक करती है। महिलाएँ एक बेटी, बहन, पत्नी एवं माँ के कर्तव्यों को भली भाँति पूर्ण करती है। अतः कहा गया है कि एक शिक्षित महिला अपनी आने वाली पीढ़ी को भी शिक्षित कर देती है। परंतु देखा जाता है कि महिलाओं को शिक्षा के क्षेत्र में अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है इसकी शुरुआत उनके परिवार से ही हो जाती है। सामान्यतः देखा गया है कि परिवार अपनी बेटियों को शिक्षा प्रदान नही करना चाहता है क्योंकि वह लडकी है। साथ ही सामाजिक, सांस्कृतिक आदि प्रकार से भी उन्हें शिक्षा प्राप्त करने में अनेक समस्याओं का सामना करना पडता है।

प्रस्तुत शोध के द्वारा आदिवासी महिलाओं के शिक्षा प्राप्त करने में आने वाली समस्याओं का अध्ययन किया गया है एवं समस्याओं से संबंधित सुझाव दिये गये है।

मुख्य बिंदुः आदिवासी महिला शिक्षा, समस्याएं, सुझाव ।

1. प्रस्तावनाः-

वर्तमान काल में महिलाएँ शिक्षा के क्षेत्र में जिस गति से बढ़ रहीं है, कुछ दशकों पूर्व इसकी कल्पना भी नहीं कर सकते थे। स्वतंत्रता के पहले महिलाओं की शिक्षा से संबंधित पूर्ण सुविधाएँ प्राप्त नहीं थी। वर्तमान में महिला शिक्षा के क्षेत्र में विशेष बल दिया जा रहा है, फलस्वरूप इस क्षेत्र में महिलाओं में जागरूकता आयी हैं। महिला शिक्षा में विकास होने से प्रत्येक धर्म, जाति, समुदाय की महिलाओं से संबंधित रूढ़िवादी सोच में परिवर्तन देखने को मिल रहा है, अब महिलाएँ सिर्फ गृहणी बनकर नहीं रह गयी है वे अब आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक हर क्षेत्र में भागीदारी दर्ज करवा रही है। इन परिवर्तनों से दुर्गम ग्रामीण क्षेत्रों में बसा आदिवासी समाज भी अछूता नहीं रह गया है। आदिवासी महिलाएँ भी शिक्षा प्राप्त कर विभिन्न व्यवसाय, नौकरी आदि कर रही है। ''2001 की जनगणनानुसार कुल आदिवासी साक्षरता दर 47.1 प्रतिशत थी जो 2011 में बढ़कर 59.0 प्रतिशत हो गई है। इसी प्रकार देश में आदिवासी महिलाओं की साक्षरता दर 1991 में 18.19 प्रतिशत, 2001 में 34.76 प्रतिशत,व 2011 में यह 49.40 प्रतिशत हो गई है। एक तरफ जहां भारत में कुल महिलाओं की साक्षरता दर 2011 की जनगणनानुसार 64.60 प्रतिशत है।''[1] कुल महिलाओं की साक्षरता दर की तुलना में आदिवासी महिलाओं की साक्षरता स्थिति अभी भी निम्न है। अभी भी लगभग 50 प्रतिशत आदिवासी महिलाएं शिक्षा के प्राथमिक स्तर से भी कोसों दूर है। आदिवासी महिलाओं को आज भी शिक्षा प्रदान करना इसलिये महत्वपूर्ण नहीं समझा जाता क्योंकि वह महिला है। आज भी हमारा समाज नारी को पराया धन ही मानता है। महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने में अनेक पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक ,व सांस्कृतिक, समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जिसके कारण आदिवासी महिलाएँ शिक्षा से वंचित है।

पुहान रश्मि रंजन एवं अन्य ने अपने अध्ययन में पाया कि लड़कियों के शाला त्यागने का प्रमुख कारण स्कूल से दूरी, बालिका स्कूलों की कमी, महिला शिक्षकों की कमी एवं क्षेत्रीय भाषा में शिक्षा उपलब्ध नहीं होना आदि है।[2] इसी प्रकार अवैस मोहम्मद एवं अन्य ने अपने अध्ययन में बताया है कि आदिवासी महिलाएं पारिवारिक व्यवस्था बनाये रखने के साथ ही उसकी आर्थिक स्थिति में सदैव ही भागीदार होती है। वह कृषि कार्य, वनों से संबंधित कार्य आदि में सदैव संलग्न रहती है। आदिवासीयों की शोषण और दयनीय दुर्दशा के लिये काफी हद तक अशिक्षा जिम्मेदार है।[3] आदिवासी महिलाओं की शिक्षा में सुधार करने के लिए सरकार लगातार प्रयासरत है विभिन्न संवैधानिक प्रावधानों, नीतियों एवं कार्यक्रमों आदि के बावजूद आदिवासी महिलाओ की शिक्षा स्तर निम्न है जिसका कारण आदिवासी समुदाय में महिला शिक्षा के प्रति जागरूकता का अभाव है। माजी सुबर्णा ने अपने अध्ययन में पाया कि जनजातीय महिलाओं को शिक्षा के क्षेत्र में अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ता है वे घरेलू कार्य करने, अपने छोटे भाई बहनों को

संभालने, वनों से सूखे पत्तों एवं बीज आदि को एकत्र करने आदि जैसे कार्य करने हेतु शिक्षा प्राप्त करने से वंचित रह जाती है तथा जनजातीय महिलाओं को शिक्षा के प्रति जागरूकता लाने में राजनीतिक उदासीनता भी देखी जा सकती है। [4]

2. अध्ययन की आवश्यकताः-

महिला अपने बच्चों की पहली गुरु होती है। अतः राष्ट्र विकास महिला शिक्षा के बिना अधुरा है। परंतु आज भी समाज महिलाओं की गृहस्थी चलाने का जरिया ही मानता है। उस पर आज भी अनेकों बंधन है। विशेषकर शिक्षा प्राप्ति के क्षेत्र में प्रस्तुत शोध के माध्यम से आदिवासी महिला शिक्षा के क्षेत्र में आने वाली पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक समस्याओं का अध्ययन किया गया है। ताकि आदिवासी समुदाय को की महिला शिक्षा के क्षेत्र में काफी पिछड़ा है उसके कारणों का पता लगाया जाये एवं प्रस्तुत शोध के द्वारा आदिवासी महिला शिक्षा हेतु सुझाव दिए गए है।

3. शोध के उद्देश्यः- आदिवासी महिलाओं की शिक्षा में आने वाली समस्याओं का अध्ययन करना एवं उचित सुझाव प्रदान करना।

4. शोध विधिः- प्रस्तुत शोध हेतु प्राथमिक संबंधों का प्रयोग किया गया है, इसके लिये म.प्र. के जिला खरगोन की पाँच तहसीलों का चयन दैव निदर्शन विधि से किया गया है। प्रत्येक तहसील से 4-4 गावों का चयन किया गया है। एवं प्रत्येक गांव से 15 ऐसी महिलाओं का चयन किया गया है जो कम से कम प्राथमिक शिक्षा प्राप्त किये हुए है। इस प्रकार प्रस्तुत शोध हेतु कुल 300 आदिवासी महिलाओं का चयन किया गया है जो कम से कम प्राथमिक शिक्षा प्राप्त है।

4.1. आर्थिक समस्याएँ:- आदिवासी समुदाय मुख्य रूप से कृषि, मजदूरी एवं वनोपज पर आर्थिक रूप से निर्भर होता है जहाँ आय काफी कम प्राप्त होती है। जिससे वे अपने बच्चों का विशेषकर लड़कियों की शिक्षा का व्यय वहन नहीं कर पाते है। माता-पिता अपनी लड़कियों को इसलिए भी स्कूल या उच्च शिक्षा प्राप्त करने कॉलेज नहीं भेजते है, क्योंकि माता-पिता कृषि कार्य करे तब तक लड़कियाँ घरेलू कार्य कर लेती है। पालक सोचते है कि लड़कियों को स्कूल भेजने के बजाय उन्हें कृषि एवं घरेलू कार्यों में दक्ष किया जाये ताकि वे सामाजिक दायित्वों का निर्वहन अच्छी तरह कर सके। साथ ही यदि लड़कियाँ स्कूल की पढ़ाई पूर्ण भी कर लेती है तो उन्हें महाविद्यालय की पढ़ाई करने शहरों में जाना पड़ता है, क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों में उच्च शिक्षा के संस्थान नहीं उपलब्ध होते है।अतः शहरों की पढ़ाई का व्यय उठा पाना गरीब पालकों द्वारा संभव नहीं होता है। यही कारण है की आदिवासी समुदाय अपनी निम्न आर्थिक स्थिति के कारण लडकियों को शिक्षा प्रदान करने मे असमर्थ होता है।

4.2. सामाजिक समस्याएँ:- समाज हमेशा से ही महिलाओं की शिक्षा के संबंध में उदासीन रहा है। प्रत्येक समुदाय में महिला शिक्षा को कोई ज्यादा महत्व नहीं दिया गया है। कहीं न कहीं इसका कारण हमारे समाज का पुरूषवादी होना है।आदिवासी समुदाय में महिलाओं की स्थिति अन्य समुदाय से बेहतर कहीं जा सकती है, क्योंकि इस समुदाय में महिलाएँ आर्थिक, सामाजिक स्तर पर पुरूषों के समान ही भागीदार होती है, परंतु फिर भी सामाजिक रूप से आदिवासी महिलाओं की शिक्षा के प्रति उदासीन ही देखा गया। वे सामान्यतः अपनी लड़कियों को प्रायमरी या हाईस्कूल तक ही शिक्षा प्रदान करते है, क्योंकि वे लड़कियों को नगर या शहर में पढ़ाना नहीं चाहते है या इस संबंध में उनकी आर्थिक स्थिति आड़े आ जाती है। साथ ही वे सोचते है कि लड़कियाँ पढ़-लिखकर क्या कर लेगी आखिर में उन्हें घर और बच्चे ही तो संभालना है। इस प्रकार की रूढ़िवादी सोच के कारण लड़कियाँ उच्च शिक्षा नहीं प्राप्त कर पाती है। सामान्यतः आदिवासी ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा प्राथमिक अथवा उच्चतर माध्यमिक तक ही उपलब्ध रहती है। माता-पिता अपनी बेटियों की सुरक्षा के डर से उन्हें बेहतर शिक्षा प्राप्त करने नगरों अथवा शहरों में नहीं भेजते है। इसके अलावा वे लड़कियों को जल्दी विवाह करने के लिए भी उच्च शिक्षा नहीं दिलवाते है। आदिवासी समाज में शिक्षा में सुधार के लिए सरकार द्वारा अनेक कार्यक्रम चलाये जा रहे है, परन्तु सरकारी सुविधाओं का क्रियान्वयन उचित तरीके से नहीं होने के कारण महिलाएँ शिक्षा से वंचित है। अंचलों में शिक्षकों की रहने की व्यवस्था ना होने के कारण स्कूलों का संचालन भी प्रतिदिन नहीं होता है, जिसका प्रभाव बच्चों की पढ़ाई पर बुरा पड़ता है, वे उच्च शिक्षा प्राप्त करने में अपनी योग्यता सिद्ध नहीं कर पाते है।

4.3. सांस्कृतिक समस्याएँ:- आदिवासी समुदाय की अपनी विशेष संस्कृति है, जो प्रत्येक क्षेत्र में विविधता लिये है। यह समुदाय सामाजिक समारोह, त्यौहार, विवाह, जन्म एवं मरण कार्यक्रम आदि में बढ़-चढ़कर खर्च करता है। इनकी आर्थिक स्थिति कमजोर होती है, निम्न आय स्तर के बावजूद ये ऋण आदि लेकर सांस्कृतिक आयोजनों में हिस्सा लेते है। इन ऋणों

का भुगतान करने के लिए ये अपने बच्चों को भी कृषि, मजदूरी एवं घरेलू कार्यों में लगा देते है। विशेषकर लड़कियों को छोटी उम्र में ही घरेलू कार्यों में लगा दिया जाता है, किशोरावस्था तक उनका विवाह कर दिया जाता है ताकि लड़कियों का विवाह कर वधुमूल्य प्राप्त हो सके। यह समुदाय लड़कियों को इसलिए भी नहीं पढ़ाता ताकि यदि लड़कियाँ शहरों में पढ़ाई करने जायेगी तो वे अंतर्जातीय विवाह करना चाहेगी। अतः वे लड़कियों को शिक्षित नहीं करते एवं छोटी उम्र में ही अपने समुदाय में उनका विवाह कर देते है।

4.4. पारिवारिक समस्याएँ:- बालिका शिक्षा के संबंध में सबसे पहली जो समस्या आती है वह पारिवारिक ही होती है। सामान्यतः देखा जाता है कि परिवार में बालिका शिक्षा के प्रति उतनी जागरूकता नहीं होती जितनी बालकों की शिक्षा के प्रति होती है। यह समस्या प्रत्येक समुदाय में देखी जा सकती है। आदिवासी समुदाय लड़कियों की शिक्षा पर समय और पैसा दोनों ही खर्च नहीं करना चाहता है। उन्हें लगता है कि लड़कियों को पढ़ा कर नौकरी आदि करवा कर उन्हें क्या मिलेगा आखिर में तो उसे ससुराल ही जाना है, अतः वे लड़कियों को उच्च शिक्षित नहीं करना चाहते है। प्रायः लिंगभेद भी समस्या की शुरूआत परिवार से ही हो जाती है। लड़कियों का परिवार सोचता है कि ज्यादा पढ़-लिखकर लड़कियाँ बिगड़ जायेगी अतः उन्हें परिवार में लड़कों के समान अवसर प्रदान नहीं होते है। आदिवासी समुदाय में सामान्यतः माता-पिता अशिक्षित होते है वे लड़कियों की शिक्षा के महत्व को नहीं जानते है। साथ ही उन्हें सरकारी कार्यक्रमों, योजनाओं एवं सुविधाओं की जानकारी नहीं है, अतः उन्हें लगता है कि लड़कियों की पढ़ाई पर इतना खर्च करने से अच्छा है, उनका विवाह सही समय पर कर दिया जाये।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के द्वारा आदिवासी महिलाओं से उनकी शिक्षा में आने वाली विभिन्न समस्याओं से संबंधित जानकारी प्राप्त की गई है, जिन्हें निम्न तालिकाओं में दर्शाया गया है।

तालिका क्रमांक-(अ)
रोजाना स्कूल नहीं जाने संबंधी जानकारी

क्र.	रोज स्कूल नहीं जाने के कारण	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	रोज स्कूल जाती थी।	107	35.66
2.	घरेलू कार्य के कारण	55	18.35
3.	आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण	84	28.0
4.	माता-पिता की रजामंदी नहीं थी	40	13.33
5.	अन्य कारण	14	4.66
	कुल	300	100.0

स्रोतः सर्वेक्षण पर आधारित समंक

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि केवल 35.66 प्रतिशत न्यादर्श के अनुसार वे रोज स्कूल जा पाती थी जबकि 18.35 प्रतिशत महिलाएँ इसलिए रोज कक्षाओं में उपस्थित नहीं हो पाती थी कि उन्हें घरेलू कार्य करने पड़ते थे। 13.33 प्रतिशत महिलाएँ माता-पिता की रजामंदी नहीं होने के कारण स्कूल/कॉलेज रोज नहीं जा पाती थी। 28.0 प्रतिशत महिलाएँ आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण नहीं जा पाती थी, क्योंकि माता-पिता चाहते थे कि लड़कियाँ उन्हें आर्थिक कार्यों में हाथ बटाये। वे लड़कियों की शहरों में उच्च शिक्षा दिलवाने में सक्षम नहीं थे। जबकि 4.66 प्रतिशत महिलाएँ अन्य कारण जैसे शिक्षा में अरूचि, विवाह जल्दी करने आदि के कारण स्कूल नहीं जाती थी।

अतः तालिका से स्पष्ट है कि आदिवासी महिलाओं की शिक्षा में मुख्य बाधा उनकी आर्थिक स्थिति।

आदिवासी महिलाओं की शिक्षा में एक प्रमुख समस्या आती है उनका ग्रामीण दुर्गम स्थलों में निवास करना जहाँ बेहतर शिक्षा की सुविधा उपलब्ध नहीं होती है। अतः वे बेहतर शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाती है। प्रस्तुत शोध अध्ययन द्वारा आदिवासी महिलाओं से उनकी निवास स्थान से स्कूल की दूरी की जानकारी प्राप्त की गई है, जिसे निम्न तालिका में दर्शाया गया है-

तालिका क्रमांक-(ब)
घर से स्कूल की दूरी

क्रं.	स्कूल की दूरी (किमी में)	आवृति	प्रतिशत
1.	1 से 3	65	21.67
2.	3 से 6	98	32.66
3.	6 से 9	114	38
4.	9 से अधिक	23	7.67
	कुल	300	100.00

स्रोतः सर्वेक्षण पर आधारित समंक

उपर्युक्त तालिका में आदिवासी महिलाओं के निवास से स्कूल की दूरी को दर्शाया गया है। जिनमें 38 प्रतिशत महिलाएँ कहती है कि स्कूल की निवासरत स्थान से दूरी 6-9 किलोमीटर थी जबकि सबसे कम 7.67 प्रतिशत महिलाएँ कहती है कि स्कूल से उनके घर की दूरी 9 किलो मीटर से अधिक थी। 21.67 प्रतिशत महिलाएँ कहती है कि उनके घर से स्कूल की दूरी 1-3 किलोमीटर के लगभग थी। जबकि 32.66 प्रतिशत महिलाओं की घर से स्कूल की दूरी 3-6 किलोमीटर थी।

अतः तालिका से स्पष्ट है कि सर्वाधिक महिलाएँ स्कूल के लिए लगभग 6-9 किलोमीटर जाती थी। जिसके कारण उन्हें सुरक्षा, परिवारजनों की मनाही, इतना चलने के बाद शिक्षकों का रोजाना स्कूल ना खोलना आदि जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता था।

इसी प्रकार आदिवासी महिलाओं से रोजाना शिक्षकों द्वारा कक्षाएँ लेने संबंधी जानकारी प्राप्त की गई। न्यादर्श द्वारा प्राप्त प्रतिक्रिया निम्न तालिका में स्पष्ट है-

तालिका क्रमांक-(स)
शिक्षकों द्वारा रोजाना कक्षाएँ लेने संबंधी जानकारी

क्रं.	रोजाना कक्षाएँ ली जाती है	आवृति	प्रतिशत
1.	हाँ	156	52.0
2.	नहीं	144	48.0
	कुल	300	100.00

स्रोतः सर्वेक्षण पर आधारित समंक

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि 52.0 प्रतिशत महिलाओं द्वारा कहा गया है कि शिक्षक रोजाना कक्षाएँ लेते थे। जबकि 48.0 प्रतिशत महिलाएँ कहती है शिक्षक रोजाना कक्षाएँ नहीं लेते थे।

अतः तालिका से स्पष्ट है कि आदिवासी ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षकों द्वारा प्रतिदिन कक्षाएँ नहीं ली जाती है। इसका कारण शिक्षकों का नगरीय अथवा शहरी क्षेत्रों में निवास करना है। रोज कक्षाएँ नहीं लगने के कारण आदिवासी क्षेत्रों में लड़कियों की पढ़ाई पिछड़ जाती है। वे बेहतर शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाती है, परिणामस्वरूप वे वर्तमान शैक्षणिक प्रतियोगिता में पिछड़ जाती है।

आदिवासी महिलाएँ ग्रामीण क्षेत्र में उपलब्ध प्राथमिक, माध्यमिक अथवा उच्चतर माध्यमिक स्तर तक ही शिक्षा प्राप्त कर पाती है और इसका कारण कहीं न कहीं महाविद्यालयीन अथवा उच्चशिक्षा संस्थानों का उनके निवास स्थानों से दूरी भी होता है। अतः न्यादर्श से उनके निवास स्थान से उच्च शिक्षा संस्थानों की दूरी से संबंधित जानकारी प्राप्त की गई जिन्हें निम्न तालिका में दर्शाया गया है-

तालिका क्रमांक-(द)
उच्च शिक्षा संस्थानों की दूरी

क्रं.	महाविद्यालय अथवा उच्च शिक्षा संस्थान की दूरी (कि.मी. में)	आवृति	प्रतिशत
1.	1 से 5	07	2.3
2.	5 से 10	25	8.3
3.	10 से 15	115	38.4
4.	15 से अधिक	153	51
	कुल	300	100.00

स्रोत: सर्वेक्षण पर आधारित समंक

उपरोक्त तालिका में आदिवासी महिलाओं की निवास स्थान से उच्च शिक्षा संस्थानों से दूरी से संबंधित जानकारी प्राप्त की गई है। जिससे ज्ञात होता है कि सर्वाधिक 51 प्रतिशत महिलाएँ कहती है कि उनके निवास स्थान से उच्च शिक्षा संस्थानों की दूरी 15 किलोमीटर से अधिक है जबकि केवल 2.3 प्रतिशत महिलाओं के निवास स्थान इन संस्थानों की दूरी से 1 से 5 किलोमीटर है।

अतः तालिका से स्पष्ट है कि आदिवासी महिलाओं द्वारा उच्च शिक्षा प्राप्त नही कर पाने का एक प्रमुख कारण उनके सुविधानुसार उच्चशिक्षा संस्थान नहीं होना है।

आदिवासी समुदाय लड़कियों की शिक्षा के संबंध में अभी भी उतना जागरूक नहीं है। जबकि वर्तमान में सरकार द्वारा इन्हें अनेक शैक्षणिक कार्यक्रम,आरक्षण एवं अन्य महत्वपूर्ण सुविधाएँ प्रदान की जा रही है। बावजूद इसके महिलाएँ अभी भी शिक्षा से वंचित है। प्रस्तुत शोध द्वारा आदिवासी महिलाओं को शिक्षा प्रदान नहीं करने के कारणों को जानने का प्रयास किया गया है, जिन्हें निम्न तालिका में दर्शाया गया है -

तालिका क्रमांक-(ई)
आदिवासी समुदाय द्वारा लड़कियों को शिक्षा ना प्रदान करने का कारण

क्रं.	कारण	आवृति	प्रतिशत
1.	बालिका शिक्षा के लाभ से अनभिज्ञ	105	35
2.	गरीबी के कारण	97	32.42
3.	सही आयु में विवाह करने की मान्यता के कारण	70	23.33
4.	पढ़ने से लड़कियाँ बिगड़ जाएगी	28	9.25
	कुल	300	100.00

स्रोत: सर्वेक्षण पर आधारित समंक

उपरोक्त तालिका के द्वारा स्पष्ट है कि 35 प्रतिशत आदिवासी महिलाओं का मानना है कि समुदाय बालिका शिक्षा के लाभ से अनभिज्ञ है। 32.42 प्रतिशत कहती है आदिवासी समुदाय गरीबी के कारण लड़कियों को शिक्षा प्रदान नही करते है। 23.33 प्रतिशत का मानना है कि इस समुदाय के लोग मानते है कि पढ़ाई करने के बजाय लड़कियों की सही उम्र में शादी कर देनी चाहिए। 9.25 प्रतिशत महिलाओं का कहना है कि लोग लड़कियों को इसलिए नहीं पढ़ाते है कि लड़कियाँ बिगड़ जायेगी अर्थात् वे सामाजिक मूल्यों, रीति रिवाजों को भूल जायेगी एवं अंतर्जातीय विवाह कर लेगी एवं शहरों में बस जायेगी।

अतः तालिका से स्पष्ट है कि आदिवासी समुदाय लड़कियों को इसलिए नहीं पढ़ाता है कि उन्हें महिला शिक्षा के महत्व की जानकारी नहीं है। वे मानते है कि लड़कियों को शिक्षा प्रदान कर क्या हो जायेगा आखिर उन्हें घर ही संभालना है। इससे अच्छा है उनका सही उम्र में विवाह कर दिया जाये।

पारिवारिक रूप से भी आदिवासी महिलाओं को भी अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। परिवार में बालिका शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण से संबंधित जानकारी प्राप्त की गई है। जिसे निम्न तालिका में दर्शाया गया है-

तालिका क्रमांक-(फ)
परिवार का बालिका शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण

क्रं.	बालिका शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण	आवृति	प्रतिशत
1.	सकारात्मक	76	25.33
2.	नकारात्मक	95	31.67
3.	लिंगभेद	129	43
	कुल	300	100.00

स्रोत: सर्वेक्षण पर आधारित समंक

उपरोक्त तालिका में न्यादर्श के परिवार में बालिका शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण को दर्शाया गया है। जिसमें 25.33 प्रतिशत महिलाओं के अनुसार परिवार में बालिका शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण है। 31.67 प्रतिशत महिलाओं के अनुसार परिवार मे बालिका शिक्षा के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण है। जबकि 43 प्रतिशत महिलाओं का कहना है कि परिवार में लिंगभेद की समस्या है। अर्थात् लड़का-लड़की की शिक्षा में अंतर समझते है। परिवार में लड़कों की शिक्षा को महत्वपूर्ण समझा जाता है, उन्हें नगरों, शहरां में पढ़ाया जाता है, उच्च शिक्षा प्रदान की जाती है, जबकि लड़कियों के बारे में कहा जाता है कि उन्हें केवल इतना शिक्षित होना है कि वह अपना नाम भर लिख सके। लड़कियों को उच्च शिक्षा एवं नौकरी की स्वतंत्रता नहीं है।परिवार में लड़कियों को लड़कों के समान अवसर प्रदान हीं किये जाते है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के दौरान पाया गया कि बहुत कम महिलाएँ थी जो उच्च शिक्षा प्राप्त थी। उच्च शिक्षा में भी स्नातक तक ही लड़कियाँ शिक्षा प्राप्त कर पाती है, उनकी बाद बहुत ही कम लड़कियाँ शिक्षा प्राप्त कर पाती है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में आदिवासी महिलाओं से उच्च शिक्षा नहीं प्राप्त करने संबंधी प्राप्त जानकारी को निम्न तालिका में दर्शाया गया है-

तालिका क्रमांक-(ज)
उच्च शिक्षा नहीं प्राप्त करने का कारण

क्रं.	कारण	आवृति	प्रतिशत
1.	उच्च शिक्षा प्राप्त करने की स्वतंत्रता नहीं	123	41
2.	उच्च शिक्षा की सुविधा ग्रामीण स्तर पर ना होना	113	37.77
3.	रूचि नहीं थी	41	13.56
4.	अन्य कारण	23	7.67
	कुल	300	100.00

स्रोतः सर्वेक्षण पर आधारित समंक

महिलाओं को दर्शाया गया है। जिसके अनुसार 41 प्रतिशत महिलाओं का कहना है कि उन्हें उच्च शिक्षा प्राप्त करने की स्वतंत्रता नहीं थी। उन्हें महिला होने के कारण उच्च शिक्षा का अधिकार नहीं था। परिवार की आर्थिक स्थिति, विवाह आदि के कारण वे उच्च शिक्षा से वंचित रहीं। 37.77 प्रतिशत महिलाओं का कहना है कि उच्च शिक्षा संस्थानों का ग्रामीण स्तर पर उपलब्ध नहीं होने के कारण वे उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाई। इसी प्रकार 13.56 प्रतिशत का कहना है कि वे स्वयं उच्च शिक्षा में रूचि नहीं रखती थी, इसलिए पढ़ाई छोड़ दी। जबकि 7.67 प्रतिशत महिलाएँ अन्य कारणों से उच्च शिक्षा नहीं प्राप्त कर पाई।

अतः तालिका से स्पष्ट है कि आदिवासी समुदाय में महिलाओं को उच्च शिक्षा प्राप्त करने में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। वे आर्थिक, सामाजिक, आदि बंधनों में बंधी होने के कारण उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाती है ।

5. निष्कर्ष:-

शिक्षा एक मात्र ऐसा साधन है, जो महिलाओं को रूढ़िवादी बंधनों से मुक्त कर सकती है ,यह महिलाओं में क्षमताओं का विस्तार करके नवीन अवसरों को प्राप्त करने में उनकी योग्यता को बढ़ाने में सहायक हो सकती है। यह बात आदिवासी महिलाओं के लिए भी समान रूप से लागू होती है। परंतु आदिवासी समुदाय शिक्षा के क्षेत्र में अभी भी पिछड़ा हुआ है। जिसके कारण उनकी निरक्षरता की दर पुरुषों की तुलना में अधिक है। इससे स्पष्ट होता है कि समाज मे लड़कियो को लड़कों के समान अवसर प्रदान नहीं होते है। आदिवासी समुदाय में सामान्यतः माता-पिता अशिक्षित होते है, वे लड़कियों की शिक्षा के महत्व से अनभिज्ञ होते है। आदिवासी समुदाय अपनी निम्न आर्थिक स्थिति के कारण भी लडकियों को शिक्षा प्रदान करने मे असमर्थ होता है। लड़कियों को स्कूल भेजने के बजाय उन्हें कृषि एवं घरेलू कार्यों में दक्ष किया जाता है ताकि वे सामाजिक दायित्वों का निर्वहन अच्छी तरह कर सके। किशोरावस्था तक उनका विवाह कर दिया जाता है। सामान्यत: देखा जाता है कि इस समुदाय में लड़कियों का शिक्षा स्तर काफी निम्न है, आदिवासी समुदाय लड़कियों की शिक्षा पर समय और पैसा दोनों ही खर्च नहीं करना चाहता है। उन्हें लगता है कि लड़कियों को पढ़ा कर नौकरी आदि करवा कर उन्हें क्या मिलेगा आखिर में तो उसे ससुराल ही जाना है, अतः वे लड़कियों को उच्च शिक्षित नहीं करना चाहते है, वहीं आदिवासी ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा प्राथमिक अथवा उच्चतर माध्यमिक तक ही उपलब्ध रहती है। माता-पिता अपनी बेटियों की सुरक्षा के डर से उन्हें बेहतर शिक्षा प्राप्त करने नगरों अथवा शहरों में नहीं भेजते है। इस प्रकार ग्रामीण स्तर पर उच्च शिक्षा संस्थानों के न होने के कारण लड़कियां उच्च शिक्षा से वंचित रह जाती है। आदिवासी ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षकों द्वारा प्रतिदिन कक्षाएँ नहीं ली जाती है। रोज कक्षाएँ नहीं लगने के कारण आदिवासी क्षेत्रों में लड़कियों की पढ़ाई पिछड़ जाती है। वे बेहतर शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाती है, परिणामस्वरूप वे वर्तमान शैक्षणिक प्रतियोगिता में पिछड़ जाती है।

इस प्रकार आदिवासी समुदाय में महिलाओं को शिक्षा के क्षेत्र में अनेक सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं पारिवारिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

6. समस्याओं के समाधान हेतू सुझाव:-

आदिवासी महिलाओं को शिक्षा के संबंध में अनेक आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक एवं सांस्कृतिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। शोध के दौरान शोधार्थी द्वारा विभिन्न समस्याओं से संबंधित जानकारी प्राप्त की गई। जिनके आधार पर शोधार्थी द्वारा उचित समाधान दिये गये है जो निम्नलिखित है-

- आदिवासी समुदाय में बालिका शिक्षा के प्रति जागरूकता लाने की आवश्यकता है, सरकार द्वारा प्रदत्त विभिन्न शैक्षणिक योजनाओं एवं कार्यक्रमों से अवगत करवाया जाये ताकि वे बालिका शिक्षा के प्रति जागरूक हो सके।
- आदिवासी ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानीय स्तर पर पृथक महिला शिक्षा संस्थानों को उपलब्ध करवाया जाए।
- आदिवासी ग्रामीण स्तर पर उच्च शिक्षा संस्थानों को बढ़ाने की आवश्यकता है।
- समय समय पर यह देखा जाए कि आदिवासी ग्रामीण क्षेत्रों मे शिक्षक रोजाना कक्षाएं ले रहे है अथवा नही एवं शिक्षकों की ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने की व्यवस्था की जाये।
- आदिवासी समाज की लड़कियों की शहरों में पढ़ाई करने की उचित एवं सरल व्यवस्था हो। छात्रावासों की संख्या बढ़ाई जाये जो निःशुल्क हो।
- लड़कियाँ यदि ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों में प्रतिदिन आवागमन करती है तो उनकी सुरक्षा की उचित व्यवस्था की जाये।
- लड़कियों को शहरी क्षेत्रों में शिक्षा प्राप्त करने हेतु महिला विशेष आवागमन साधन सुविधा उपलब्ध करवाई जाए।
- ग्रामीण क्षेत्रों में पर्याप्त शिक्षकों की उपलब्धता हो।
- आदिवासी ग्रामीण क्षेत्रों में बालिका शिक्षा के लाभों से संबंधित कार्यक्रमों का प्रसार करते रहना चाहिए ताकि बालिका शिक्षा के प्रति व्याप्त रूढ़िवादी सोच में बदलाव आ सके।
- आदिवासी क्षेत्रों में अध्यापन हेतु स्थानीय भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिए।

आभार:- शोधकर्ता, विभागाध्यक्ष एवं प्राचार्य माता जीजाबाई शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय इंदौर, मुख्य ग्रंथपाल केंद्रीय ग्रंथालय देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर मध्य प्रदेश, आवश्यक संसाधन व शोध साहित्य उपलब्ध करवाने हेतु एवं आर्थिक सहायता के रूप में राजीव गांधी राष्ट्रीय फेलोशिप, प्रदान करने हेतु विश्वविद्यालय अनुदान आयोग एवं जनजातीय कार्य मंत्रालय, भारत सरकार के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. https://tribal.nic.in/downloads/statistics/statistics8518.pdf
2. Puhan Rasmi Ranjan, Gamango Gorachando, Malla Lakmipriya (June 2013) "educational Participation of scheduled Tribal Women in Rayagada District Analysis of the Barriers and Ongoing measures by Government." *International Journal of Educational Research and Technology* P-ISSN 0976-4089, E-ISSN 2277-1557 IJE RT: Volume 4 (2) Page No. 22-30
3. Awasis Mohammed, Alam Tasib, Asif Mohd. (Oct. 2009) "Socio-Economic Empowerment of Tribal women An Indian Perspective, *International Journal of rural Studies (IJRS)* Vol. 16, No. 1, ISSN 1023-2001, Page No. 1-11.
4. Maji Subarna (Oct. 2016) "Educational statas of Tribal women in west Bengal". *International Journal of Allied Practice, Research and review*. ISSN 2350 1294, Vol III, Issue IX, Page No. 06-10.